मालवा-निमाड़

जाग्रत मालवा

5 दिसम्बर 2024
मूल्य : 10.00 रुपये
पंजीयन क्रमांक : MPHIN/2021/82532
मासिक जागरण पत्रिका

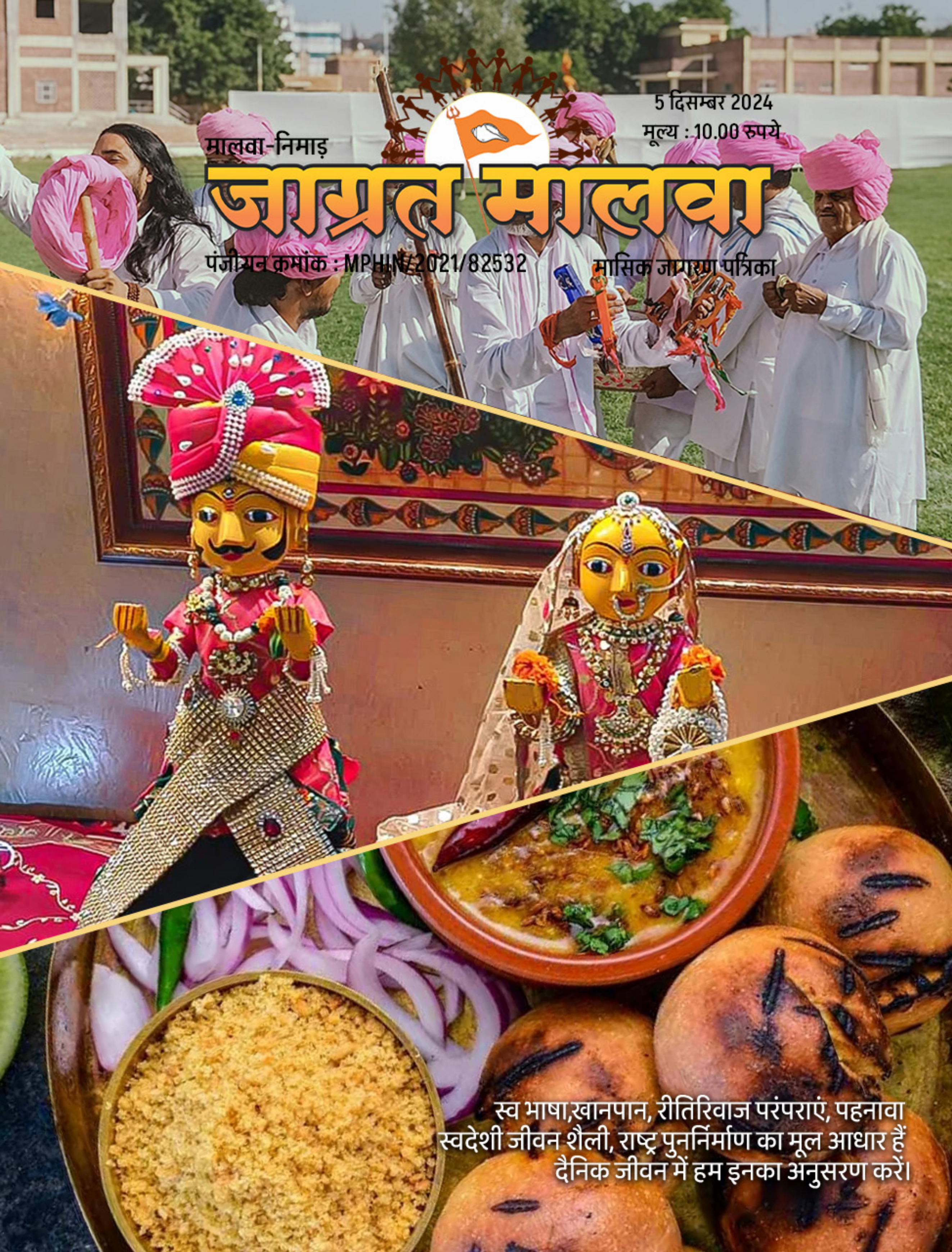

स्व भाषा,खानपान, रीतिरिवाज परंपराएं, पहनावा
स्वदेशी जीवन शैली, राष्ट्र पुनर्निर्माण का मूल आधार हैं
दैनिक जीवन में हम इनका अनुसरण करें।

Azadi Ka Amrit Mahotsav

SHAKTI
PUMPING LIFE

सूर्य ही नई शक्ति

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

सौर ऊर्जा का उपयोग एवं अपार फ़ायदों को सभी जानते है, और इसलिये हर जगह एवं हर क्षेत्र में इसका अस्तित्व दिखने लगा है. अब सौर ऊर्जा का उपयोग उद्योगों के साथ साथ घरेलु बिजली के उपयोग में भी होने लगा है. शक्ति पम्पस् ने शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम को विकसित किया है.

MRP 29500/-

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

- 150 वॉट का एक सोलर पेनल
- लिथीयम एंड फास्फेट (LFP) बैटरी 60 Ah
- MPPT चार्ज कंट्रोलर 20 A
- डीसी सिलिंग फैन
- 02 व्हाईट एलईडी बल्ब 6 वॉट

विशेषताएं

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम में एक बार का निवेश जो आपको साल-दर-साल फायदा पहुंचाएं.

- बिजली के बिल में कमी
- लम्बे समय तक चले
- भरोसेमंद एवं बाधा रहित परफॉर्मेंस
- रख-रखाव एवं चलाना आसान
- पर्यावरण-अनुकूल
- प्रचुर मात्रा में उपलब्धता
- परंपरागत ऊर्जा के स्रोतों पर निर्भरता से मुक्त
- सरल संचालन
- लिथियम बैटरी की लाईफ अन्य सामान्य बैटरी की तुलना में अधिक है एवं यह बहुत जल्दी चार्ज होती है.

सोलर कंट्रोलर की विशेषताएं

- HIGH PERFORMANCE CHIP
- MULTIPLE PROTECTION
- AUTOMATIC RECOGNITION
- LIGHT EFFICIENCY TIME CONTROL
- PWN CHARGE
- SIMPLE INSTALLATION

कार्यप्रणाली

India : Toll Free No. 1800 103 5555

शक्ति पम्पस् (इंडिया) लिमिटेड

सेक्टर - 3, औद्योगिक क्षेत्र, पीथमपुर, जिला-धार (म.प्र.) - इंडिया फोन.: +91-7292-410500
ई-मेल: info@shaktipumps.com, वेब: www.shaktipumps.com. टोल फ्री नं.: **1800 103 5555**

* नियम व शर्तें लागू

जाग्रत मालवा
इन्दौर दिनांक 5 दिसम्बर 2024 मासिक जागरण पत्रिका

मासिक जागरण पत्रिका
शीर्षक (टाईटल) पंजीयन MPHIN/2021/82532
वर्ष : 04 अंक : 07
•••
अगहन शुक्ल – 3
युगाब्द ५१२६

प्रधान संपादक
देवकृष्ण व्यास
संपादक
अरुण सपकाले
संपादक मंडल
डॉ. सुब्रतो गुहा
डॉ. सोनाली नरगुन्दे
डॉ. रत्नदीप निगम
डॉ. उत्तम मीणा
अशोक वर्मा
राकेश दांगी
राजेश सोनी
•••

मुख्य कार्यालय
जाग्रत मालवा
जी–1, केसरदीप एवेन्यू
72, नारायण बाग, इन्दौर (म.प्र.)
पिन कोड : 452007
फोन : 0731–3551341
•••
Email :
jagratmalwa@gmail.com
jagratmalwa

स्वामी – विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए–11/डी पोलोग्राउंड इंदौर म.प्र. से मुद्रित एवं 72, नारायण बाग, जीं–1, केसरदीप एवेन्यु इन्दौर म.प्र. से प्रकाशित। संपादक अरुण सपकाले फोन नं. 0731–3551341

अपनी बात

ॐ

स्वदेशी विचार शाश्वत है और व्यावहारिक है। यह स्वाभिमान को जगाने वाला भाव है। स्वभाषा, स्व-वेशभूषा, स्व-संस्कृति के प्रति गौरव की अनुभूति करवाने वाला विचार है।

महर्षि अरविन्द, लोकमान्य तिलक, स्वामी विवेकानन्द, वीर सावरकर, महात्मा गांधी आदि ने भी स्वदेशी को स्वतंत्रता प्राप्त करने का आधार बनाया था। इसके कारण ही यह भावनात्मक आंदोलन बना था।

हम स्वराज तो ले आये लेकिन अभी स्व-**तंत्र** खड़ा नहीं कर पाये हैं। जब तक स्व-**तंत्र** खड़ा नहीं होगा तब तक हम वास्तविक अर्थों में **स्वतंत्र** नहीं हैं। एक ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने हम पर राज्य किया अब तो हजारों कंपनी आ रही हैं अतः हमें सावधान रहना अत्यन्त आवश्यक है। किसी भी विदेशी उत्पाद को क्रय करते समय यह अवश्य ध्यान में रखना चाहिए कि वह हमारे देश की अर्थव्यवस्था के घातक तो नहीं है।

जहाँ तक संभव हो विदेशी वस्तुओं का उपयोग बन्द करना चाहिये। क्योंकि विदेशी वस्तु खरीदने का पूरा लाभ विदेश को होता है और हमारे देश की अर्थव्यवस्था कमजोर होती है।

अगर भारत को समर्थ बनाना है तो स्वदेशी तंत्र एवं स्वदेशी योजना को अपनाकर अपने ही सामर्थ्य से विकसित राष्ट्र बना सकता हैं। वर्तमान चुनौतियों के समाधान अपनी परंपरा में ही खोजने की आवश्यकता है।

स्वदेशी धारणा अपने शाश्वत जीवन मूल्यों के प्रकाश में अपने देश और समाज की प्रकृति, उसकी प्रवृत्ति तथा सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों के अनुसार अपनी शक्ति, सामर्थ्य एवं कौशल के आधार पर देश की ऊर्जा का जागरण कर सर्वमंगलकारी विकास करना है। हिंदू जीवन पद्धति दुनिया की अद्वितीय और श्रेष्ठ जीवन पद्धति है इसमें स्वदेशी का भाव निहित है। अपने स्वत्व का जागरण कर स्वावलंबी राष्ट्र का निर्माण कर स्वदेशी भाव का विस्तार करके एक समर्थ भारत बनाने में सहभागी बनें।

स्वदेशी दृष्टिकोण न तो सरकार आश्रित अर्थव्यवस्थाओं में विश्वास रखता है और न ही बाजार आश्रित अर्थव्यवस्था में। यह जन-आश्रित अथवा जन-सहयोग एवं जन-सहभागिता वाली अर्थव्यवस्था में विश्वास रखता है।

स्वत्व का कर जागरण, स्वभाषा स्ववेश।
स्वधर्म स्वाभिमान से, आगे बढ़े स्वदेश।

'स्व' के जागरण से होगा - श्रेष्ठ भारत का निर्माण

दुर्गेश कुमार साध

भारत कोई 75 साल पुराना देश नहीं है, बल्कि स्वतंत्रता-संग्राम के कई सदियों पहले भी भारत अस्तित्व में था। भारत विश्व की सबसे प्राचीन सभ्यता व संस्कृति है। भारत 1947 में नहीं बना। भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम को केवल राजनैतिक आंदोलन भी नहीं माना जा सकता, क्योंकि इसके मूल में स्व-देश, स्व-राज्य एवं स्व-अधीनता प्राप्त करने की एक सामाजिक-सांस्कृतिक पहल थी, जिसमें समाज के प्रत्येक वर्ग की सहभागिता थी, अतः यह एक जन-सामाजिक आंदोलन था।

अंग्रेजों से हम स्वतंत्र हो तो गये थे, मगर क्या इतने से ही नवीन भारत की परिकल्पना साकार हो सकती थी? नहीं, नये भारत के सामने नई चुनौतियाँ मुँह बाये खड़ीं थीं। भारत लगभग 900 सालों तक आंशिक पराधीनता के दौर में रहा। इतने लंबे समय में कोई भी सभ्यता दम तोड़ सकती थी, मगर यह भारत की जीवटता ही थी कि हम आज भी न केवल जीवित हैं, बल्कि नये भारत की संपूर्ण तैयारियों में जुटे हुए हैं। अंग्रेजों ने जब भारत छोड़ने का मन बनाया, तब उन्हें यह डर था कि भारत के लोग अपना देश नहीं चला पाएँगे, क्योंकि लंबे समय की पराधीनता ने उनके मन में औपनिवेशिक दासता के बीज बो दिये थे, मगर तत्कालीन भारतीयों को दृढ़ विश्वास था कि हम न केवल अपना राज्य स्थापित करेंगे, बल्कि उसे पुनः **'विश्वगुरु'** के पद पर आसीन करने के लिए अपना सर्वस्व लगा देंगे।

वर्तमान समय भारत का है। भारत विश्व की तेज़ी से बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था है। अगर यही गति रही तो भारत जल्द ही अन्य देशों को पछाड़कर विश्व की तीसरी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। अभी भारत में विश्व की सर्वाधिक जनसंख्या निवास करती है, इसलिए हम विश्व का एक सबसे बड़ा बाज़ार हैं, क्योंकि हमारे पास सर्वाधिक उपभोक्ता हैं। अगर हम इस उपभोक्ता वर्ग का अच्छे से नियोजन कर सकें, तो हमें आगे बढ़ने से कोई नहीं रोक सकता। युवावर्ग जनसंख्या में भी भारत पहले पायदान पर ही है। कोविड काल में भारतीय अर्थव्यवस्था को केवल इसलिए अधिक नुकसान नहीं हुआ, क्योंकि भारत की अर्थव्यवस्था कृषि आधारित है। भारत के पास विश्व में सबसे अधिक कृषि योग्य भूमि है। इसलिए कृषि को और अधिक उन्नत (रासायनिक नहीं) बनाकर हम ग्रामीण रोजगार बढ़ाकर अर्थव्यवस्था को और ऊँचाई पर पहुँचा सकते हैं। इन सब बातों को भारत की वर्तमान सरकार इस स्थिति को अच्छे से जानती थी, इसलिए भारत ने अपने विनिर्माण और सेवा क्षेत्रों पर अधिक जोर देकर **'वोकल फॉर लोकल'** का नारा दिया है। इसका अर्थ है कि हम स्व-देशी उत्पादों (भारतीय स्वामित्व वाले भारत में निर्मित) का अधिकाधिक प्रयोग प्रारंभ करें। सरकारी नीतियाँ ऐसी बनाई जा रही हैं, जिससे स्वदेशी उत्पादों को प्राथमिकता मिले एवं वे विदेशी उत्पादों के सामने प्रतिस्पर्धा कर सकें।

इस वर्ष संघ अपने **शताब्दी वर्ष** में प्रवेश कर रहा है, इसलिए संघ ने समाज के बीच कुछ संकल्प निर्धारित किये हैं, जिनके द्वारा शीघ्र ही समाज में सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिलेंगे। इन पाँच सूत्री संकल्पों को **पंच परिवर्तन** कहा जा रहा है। इनमें से एक संकल्प हैं - स्वदेशी जीवनशैली, जिसके मूल में **'स्व'** के जागरण का भाव है। यहाँ ध्यान देने वाली बात यह है कि **'स्व'** का भाव, **'अहम्'** के भाव से भिन्न है। स्व का भाव, अपनेपन का भाव है, वहीं अहम् का भाव नितांत व्यक्तिगत (केवल मेरा) भाव है।

'स्व' का जागरण केवल स्वदेशी उत्पादों के उपयोग तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसमें स्वाधीनता, स्वराज, स्वावलंबन, स्वभाषा, स्वविनिर्माण उद्योग, स्वरोजगार, स्ववेशभूषा, स्वज्ञान इत्यादि आयाम भी सम्मिलित हैं। हम स्वावलंबी बनें, स्वभाषा का प्रयोग कर उसे और उन्नत करें, स्ववेशभूषा को अपनाएँ, अपने वेदादिक ज्ञान का वैज्ञानिक आधार पर उपयोग करें, स्वरोजगार सृजित करें, यही **'पंच परिवर्तन'** के संकल्प - **'स्वदेशी जीवनशैली'** के मूल तत्व हैं।

'स्व' के जागरण से होगा - श्रेष्ठ भारत का निर्माण

डॉ. सुब्रतो गुहा

जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं
हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसमें स्वदेश से प्यार नहीं।

स्व अर्थात् स्वयं की एवं स्वयं की सभ्यता संस्कृति व राष्ट्र की पहचान एवं इनके बारे में स्वाभिमान जागरण - जो अपना है, वही प्यारा है, श्रेष्ठ है- तथा उस पर ग्लानि का भाव नहीं बल्कि गर्व का भाव हृदय में संचारित होना चाहिए। जिस प्रकार स्वनिर्भर या आत्मनिर्भर व्यक्ति को समाज में सम्मान मिलता है, उसी प्रकार स्वनिर्भर या आत्मनिर्भर राष्ट्र को भी विश्व में सम्मान मिलता है। दूसरों की बैसाखी अथवा सहारे से चलने से अच्छा है कि हम आत्मनिर्भर बनकर आत्मविश्वास के साथ तनकर चलना सीखें।

सनातन हिन्दू संस्कृति में **स्व** की संकल्पना समाहित है - स्व-राज्य, स्वदेषी, स्वराज, स्वाधीनता, स्वावलम्बन, स्व भाषा, स्व-भूषा, 'स्व रोजगार, स्व-ज्ञान, स्व-निर्भरता, स्व-जीवनशैली अपनाकर ही हम समाज में प्रतिष्ठा और सम्मान प्राप्त कर सकते है। यूनान, मिस्र, बेबिलोन इत्यादि कई प्राचीन देशों ने **स्व** का सिद्धांत नहीं अपनाया - एवं इसके कारण आज उन देशों का अस्तित्व तो है, परन्तु उनकी मूल सभ्यता संस्कृति और मूल पहचान मिट गई - केवल इतिहास के पृष्ठों तक ही सीमित हो गई। दूसरी ओर भारत की सनातन सभ्यता, संस्कृति एवं धर्म आज भी जीवित है क्योंकि भारतवंशी सनातन धर्मियों ने अपनी पहचान को **स्व** से जोड़ा - **यूनानों, मिस्र, रोमा-सब मिट गए जहाँ से,**
अब तक मगर है बाकी नामोनिशां हमारा,
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी,
सदियों रहा है दुश्मन, दौरे जमा हमारा।

स्व को अपनाकर ही हम स्वयं की एवं अपने समाज व राष्ट्र की विशिष्ट .... पहचान विश्व में स्थापित कर पाते हैं। भीड़ में अनेकों में एक दिखने वाले की पहचान नहीं होती परन्तु भीड़ में भी सबसे अलग दिखने वाले व्यक्ति को आसानी से पहचाना जा सकता

है। दूसरों पर निर्भरता ग्लानि का भाव जाग्रत करता है जबकि आत्मनिर्भरता अथवा स्व-निर्भरता, आत्मविश्वास को जन्म देता है। जब हम सही अर्थों में स्वयं को पहचानकर जीवन पथ पर आगे बढ़ते हैं - तब हम अपनी मूल पहचान शरीर से नहीं, बल्कि शरीर के अंदर की आत्मा को ही अपना मूल स्वरूप मान लेते हैं और इस रहस्य को भी जान पाते हैं कि हमारा शरीर नश्वर है, केवल कुछ समय के लिए है, जबकि आत्मा अमर है और शरीर की मृत्यु के बाद आत्मा परमात्मा में विलीन हो जाती है।

स्व के भाव का जागरण मन में एक अपूर्व आत्मविष्वास जाग्रत करता है, जिसके बल पर हम जीवन पथ की सभी बाधाओं को पार करते हुए निश्चित सफलता की ओर बढ़ने का साहस जुटा पाने में सक्षम होते हैं -

हमको मिटा सके, ये ज़माने में दम नहीं,
हमसे है ज़माना, ज़माने से हम नहीं।।

मालवा में विवाह संस्कार की परंपराएं एवं रीति रिवाज

पंडित डॉ. राजेश रावल 'सुशील'

सनातन संस्कृति में सोलह संस्कारों का विशेष महत्व है। इन सोलहों संस्कारों में सबसे महत्वपूर्ण संस्कार है **विवाह संस्कार** और इस विवाह संस्कार की अपनी एक अत्यंत गौरवशाली परंपरा है, जो युगो-युगो से उसी समृद्धशाली रूप में चली आ रही है। विवाह एक धार्मिक बंधन है जो केवल वर-वधु को ही नहीं जोड़ता बल्कि दो परिवारों का भी जोड़ता है और यही परिवार एक-दूसरे से जुड़कर संगठित समाज का निर्माण करते हैं । जहां तक हम मालवा प्रांत के वैवाहिक, मांगलिक रीति-रिवाजों की बात करें तो कुछेक स्थानों एवं जातियों की कुछ-कुछ परंपराओं को छोड़ दें तो लगभग सभी परंपराएं, रीति-रिवाज, धार्मिक क्रियाकलाप, नेग, दस्तूर, कुछ प्रमुख देवी देवताओं का पूजन एवं मांगलिक गीत आदि सब एक जैसे ही प्रतीत होते हैं। विवाह के अवसर पर बनाए जाने वाले मांडने, भित्ति चित्र, रेखांकन एवं मांगलिक चिन्ह एवं देवी देवताओं के चित्र आदि में भी बहुत कुछ समानता दिखाई देती है। यहां तक की विवाह परंपरा के शुभारंभ से लेकर समापन तक के रीति-रिवाज का क्रम भी सभी समाजों में एक जैसा ही मिलता है। इससे पता चलता है कि बुनियादी तौर पर हम भले ही एक दूसरे से अलग दिखाई देते हो किंतु हमारी अंदरुनी बनावट, संस्कृति एवं सभ्यता एक जैसी है । विवाह संस्कार के अंतर्गत बहुत सी ऐसी परंपराएं हैं, जो समान रूप से सभी समाज में कुछ-कुछ परिवर्तन के साथ दिखाई देती है। मांगलिक संस्कारों का शुभारंभ सगाई की परंपरा से होता है और फिर क्रमशः पंडित, पुरोहित या ज्योतिषी से विवाह की तिथि निकलवाने अर्थात लग्न लिखवाने से प्रारंभ होता है। इसके पश्चात उस **लग्न पत्रिका** को सर्वप्रथम अपने आस-पास के किसी देवस्थान पर ले जाकर रख दिया जाता है। लगभग सभी जातियों में अपने कुल देवी देवताओं के स्थान पर अथवा गांव के किसी बड़े मंदिर में रखकर फिर वहां से उन्हें ढोल-नगाड़ों के साथ, महिलाओं द्वारा पूजन करके सर-माथे से लगाकर, स्वागत सम्मान के साथ अपने घर ले जाया जाता है जिसे **लग्न बधाना** कहते हैं । लग्न बधाने के बाद से जब तक विवाह संस्कार शुरू नहीं होता तब तक घर में सात्विक वातावरण रखा जाता है । महिलाएं नित्य सांयकाल के समय एकत्रित होकर गणपति के गीत एवं बधावे गाती हैं । विवाह उत्सव के प्रारंभ से पूर्व लगभग सभी जातियों में वर अथवा कन्या से कुल देवी-देवताओं एवं अपने आस-पास के सभी देवी-देवताओं का पूजन अर्चन करवाया जाता है। पूर्वजों को पूजन-पाठ, धूप-ध्यान आदि के माध्यम से विवाह में निमंत्रण दिया जाता है जिसे त्रिपिंडी कहते है। ऐसी ही कुछ मुख्य-मुख्य परंपराऐं इस प्रकार हैं-

❖ **सगाई** - सगाई परंपरा अर्थात विवाह के लिए रिश्ता पक्का करना। जिसे **टीका करना** एवं **तेवारी चड़ाना** भी कहते हैं।

❖ **लग्न लिखाना** - सगाई रस्म पूरी होने के पश्चात विवाह करने की तिथि निश्चित की जाती है। ब्राह्मण को बुलवाकर लड़के-लड़की के विवाह के लिए शुभ मुहूर्त निकलवाया जाता है।

❖ **कुलदेवी देवता पूजन** - शीतला माता के साथ ही नवग्रह, गोत्रज, कुल देवी-देवताओं एवं लोक देवता **गुणा बापजी** का भी पूजन किया जाता है।

❖ **तेल चढ़ाना** - हल्दी का उबटन लगाया जाता है। पांच स्त्रियां गीत गाती हुई पांच पान पैर, घुटने, कमर तथा सर से स्पर्श कराते हुए गीत गाती है। हल्दी से उबटन तैयार कर शरीर पर लगाया जाता है।

❖ **खानागार खरमाटी एवं चाक पूजन**- इस परंपरा में महिलाएं मंगल गीत गाते हुए कुम्हार के घर जाकर मिट्टी खोद कर लाती है। चाक बधाती है एवं कुेहार को दक्षिणा देकर चाक का पूजन करती है ।

❖ **श्री गणेश पूजन**- सनातन संस्कृति में लगभग सभी मांगलिक कार्यो में सर्वप्रथम श्री गणेश पूजन का विधान है। कलश एवं दीपक पूजन कर दीप प्रज्वलित कर संकल्प के साथ श्री गणेश का आव्हान कर उनका पूजन अर्चन किया जाता है ।

❖ **माँ माता मांडना** - माँ माता मांडने का रिवाज सभी जगहों पर एवं सभी समाजों में होता है किंतु मांडने का स्वरूप, उसकी प्रक्रिया एवं पूजन विधि कुछ-कुछ अलग होती है ।

❖ **बाना जवारा**- दूल्हा-दुल्हन को हल्दी लगने के दिन से ही गांव में अथवा यदि नगर है तो अपने मोहल्ले में शोभा यात्रा निकालने की परंपरा रही है। बाना अर्थात दरवाजा या द्वार को कहा जाता है।

❖ मंडप- लगभग सभी जातियों में बांस से मंडप बनाया जाता है। विवाह संस्कार को मुख्य रूप से सांसारिक जीवन अथवा गृहस्थ आश्रम में प्रवेश का संस्कार कहा गया है।

❖ **वरनिकासी** - बाने-जवारे पूरे होने के पश्चात बारात की तैयारी की जाती है। दुल्हे को मोड़ बांधा जाता है। बारात वर के यहां से प्रस्थान कर वधु के घर पर पहुंचती है।

❖ **लग्न लगाना**- माँ माता के आगे वर वधू को आमने-सामने बिठाकर दूल्हे के दाहिने हाथ पर दुल्हन का दायां हाथ रखकर एवं दोनों के बीच में सफेद वस्त्र का पर्दा कर पंडितों द्वारा मंगलाष्टक के साथ लगन लगाए जाते हैं ।

❖ **छेड़ा गाठन एवं चंवरी फेरे (सप्तपदी)**- जहां तक सप्तपदी का सवाल है, यह परंपरा सभी स्थानों एवं जातियों में, कुछ छोटी-छोटी परंपराओं के साथ लगभग एक जैसी है। मां माता के आगे पूजन अर्चन के पश्चात वर वधू के छेड़ा गाठन बांधे जाते हैं। फेरों के उपरांत सात वचन भरवाना, मंगलसूत्र पहनाना, अंगूठी पहनाना, मांग भरना, कसार जिमाना, कन्या दान, दहेज दान, मांडवा बरसाना, वधू द्वारा देहलीज पूजन के पश्चात बिदाई के साथ विवाह परंपरा समापन की ओर होती है ।

स्वदेशी पुनरुत्थान और देवी का योगदान

अरुंधती सिंह चंदेल

देवी अहिल्याबाई होलकर को भारतीय इतिहास में एक आदर्श प्रशाशक, परोपकारी, और स्वदेशी विचारधारा को बढावा देने वाली महिला के रूप में जाना जाता है। एक कुशल प्रशाशक, समाज सेविका और धार्मिक प्रेरणा के स्त्रोत के रूप में, अहिल्याबाई ने आत्मनिर्भर भारत की नींव रखी और स्वदेशी वस्त्र, हस्तशिल्प, और कृषि को प्रोत्साहन देकर भारतीय समाज को सशक्त बनाने का संकल्प लिया। उनका शाशनकाल भारतीय आत्मसम्मान का उदाहरण बना और उन्होंनें विदेशी वस्तुओं पर निर्भरता को चुनौती दी। उनका शाशनकाल, जो 18वीं शताब्दी के मध्य में था, भारतीय स्वराज्य और स्वदेशी विकास की भावना को सजीव करने का प्रयास था। अहिल्याबाई होलकर ने स्वदेशी चीजों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे हमेशा आत्मनिर्भरता की बात करती थी और यह चाहती थीं कि उनके उनके राज्य में बनी चीजें ही लोगों की जरूरतों को पूरा करें।

देवी अहिल्याबाई होलकर की नीतियाँ दैव स्वदेशी मूल्यों पर आधारित थीं, जिसके परिणामस्वरूप उन्होंने अपने नागरिकों को रोजगार प्रदान किया और उनके कौशल एवं व्यवसाय को प्रोत्साहन दिया, जो राज्य के खजाने के उत्थान के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध हुआ। उनकी स्वदेशी विचारधारा उनके प्राचीन भारतीय संस्कारों से प्रेरित थी। उनका मानना था कि भारतीय समाज को आत्मनिर्भर और आर्थिक रूप से स्वतंत्र होना चाहिए। इसलिए उन्होंने अपने शासनकाल में विदेशी वस्त्रों और वस्तुओं की तुलना में स्वदेशी उत्पादों का उपयोग करने और उन्हें बढ़ावा देने पर जोर दिया। वे समझती थी कि विदेशी वस्त्रों और सामग्री का उपयोग न केवल आर्थिक नुकसान पहुंचाता है, बल्कि यह भारतीय सांस्कृतिक धरोहर के प्रति उदासीनता को भी बढ़ावा देता है। वस्त्र उद्योग को बढ़ावा देने के लिए भी उन्होंने कई कदम उठाए। उन्होंने अपने राज्य में बुनकरों, कारीगरों और अन्य उद्योगों को बढ़ावा दिया ताकि अधिक से अधिक भारतीय वस्त्र तैयार किए जा सकें । खासकर मलमल, खादी, और अन्य स्थानीय वस्त्रों को उन्होंने प्रोत्साहन दिया। उन्होंने अपने दरबार में सभी को निर्देश दिया कि स्थानीय उत्पादित वस्त्रों का ही उपयोग किया जाए। साथ ही, उनके शासनकाल में विशेष मेलों और हाटों का आयोजन होता था, जहाँ स्थानीय कारीगरों को अपने उत्पादों को बेचने का मौका मिलता था।

देवी ने हस्तशिल्प और कुटीर उद्योग को दिया। उन्होंने अपने राज्य में कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन देने के लिए करों में छूट प्रदान की। उनके शासन में कुम्हारों, लोहारों, और कारीगरों की स्थिति में सुधार हुआ और उन्होंने उनके कार्यों के लिए उचित सम्मान और मजदूरी मिली। इसके अतिरिक्त, उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि राज्य के धन का उपयोग स्थानीय उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए किया जाए।

स्वदेशी की अद्वितीय प्रतिमा और आत्मनिर्भरता की प्रेरणा- देवी अहिल्याबाई होलकर एक ऐसी महिला थी जिन्होंने न केवल एक आर्दश प्रशासक के रूप में कार्य किया बल्कि स्वदेशी वस्तुओं के प्रति जागरूकता पैदा करके भारतीय समाज में आत्मनिर्भरता का संदेश फैलाया। उनका शासनकाल भारतीय गौरव, आत्मसम्मान, और स्वदेशी भावना का प्रतीक बना।

देवी अहिल्याबाई होलकर की नीतियाँ बहुआयामी दृहिकोण के साथ कौशल विकास और व्यवसाय को बढ़ावा देने पर क्रेंदित थी। उन्होंने स्थानीय निर्मित वस्त्रों हस्तशिल्प, हर्बल औषधियों और अन्य उत्पादों को प्रोत्साहित किया, निर्माण कार्यों में स्थानीय उत्पादों का उपयोग किया, और स्थानीय लोगों द्वारा विकसित आधुनिक कृषि विधियों को अपनाने का समर्थन किया किया। इसके साथ ही उन्होंने महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए एक मजबूत समर्थन प्रणाली बनाई, जिसमें स्थानीय बाजारों का विकास और विभिन्न प्रकार की व्यवसायिक विचारधाराओं को शामिल किया गया। इसके अलावा, जहाँ-जहाँ उन्होंने कोई निर्माण कार्य करवाया, वहाँ स्वदेशी विचारधारा को समाज और आस-पास के क्षेत्रों में प्रसारित करने का कार्य किया।

स्वदेशी वस्त्र उद्योग का पुनरुत्थान - अहिल्याबाई होलकर ने स्थानीय बुनकरों को प्रोत्साहित करने के लिए खादी, मलमल जैसे स्वदेशी

वस्त्रों का उपयोग किया और अपने दरबार के अधिकारियों को भी इन्हीं वस्त्रो को अपनाने का आदेश दिया। उन्होंने कारीगरो के लिए विशेष मेलों का आयोजन किया जिससे स्थानीय वस्त्र उद्योग को दृढ़ता मिली और विदेशी वस्त्रों पर निर्भरता कम हुई।

हस्तशिल्प और कुटीर उद्योग को संजीवनी - उन्होंने कुम्हार, लोहार, बुनकर आदि पर लगाए गए करों में छूट देकर स्थानीय कारीगरों और हस्तशिल्प को प्रोत्साहन दिया। प्रदर्शनियों के आयोजन से हस्तशिल्पियों को अपनी कला का प्रसार करने का अवसर मिला, जिससे राज्य में कुटीर उद्योग सशक्त हुआ और शिल्पियों का जीवन स्तर ऊँचा हुआ।

धार्मिक स्थलों में स्वदेशी सामग्री का उपयोग- अहिल्याबाई ने काशी विश्वनाथ, महाकाल मंदिर जैसे प्रमुख धार्मिक स्थलों का निर्माण स्थानीय सामग्रियों और शिल्पकारों के माध्यम से करवाया। इन स्थलों के निर्माण में स्वदेशी सामग्रियों का उपयोग कर उन्होंने आत्मनिर्भरता और स्वाभिमान का संदेश दिया।

कृषि और व्यापार को प्रोत्साहन - उन्होंने किसानों को उन्नत कृषि तकनीकों और स्थानीय बीजों के प्रयोग हेतु प्रोत्साहित किया, सिंचाई सुविधाओं का विस्तार किया और व्यापारियों को भारतीय उत्पादों को प्राथमिकता देने हेतु प्रेरित किया। उनके इन प्रयासों से राज्य की अर्थव्यवस्था में स्वदेशी उत्पादों का महत्व बढ़ा।

महिलाओं में स्वावलंबन और स्वदेशी भावना का प्रसार - महिलाओं को स्वावलंबी बनाने हेतु कुटीर उद्योगों में संलग्न होने के अवसर और प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किए। इससे महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता और आत्मसम्मान मिला, जिससे समाज में उनकी सशक्त भागीदारी बढ़ी।

स्वदेशी विचारधारा का सामाजिक प्रसार - अहिल्याबाई ने समाज में स्वदेशी वस्त्रों, हस्तशिल्पों और उत्पादों का उपयोग करने की आदत को प्रोत्साहित किया, जिससे आत्मनिर्भरता और भारतीयता की भावना मजबूत हुई। उनके आदर्शों से यह संदेश प्रसारित हुआ कि सशक्त समाज वही होता है जो अपनी संस्कृति और संसाधनों का सम्मान करता है।

निष्कर्ष- देवी अहिल्याबाई होलकर का जीवन एवं उनके कार्य भारतीय समाज के लिए आदर्श हैं। स्वदेशी को बढ़ावा देने और आत्मनिर्भरता की दिशा में किए गए उनके प्रयास आज भी प्रासंगिक हैं और हमें प्रेरित करते हैं। उन्होंने समाज में स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग करने का महत्व समझाया और भारतीय संस्कृति को संजोने का संदेश दिया। अहिल्याबाई का जीवन यह सिद्ध करता है कि सशक्त और आत्मनिर्भर समाज वही है जो अपने संसाधनों का सम्मान करता है और अपनी सांस्कृतिक धरोहर को आत्मसात करता है। उनके द्वारा अपनाई गई स्वदेशी विचारधारा और नीतियाँ हमारी सांस्कृतिक पहचान और आर्थिक आत्मनिर्भरता का प्रतीक हैं। देवी अहिल्याबाई का योगदान भारतीय समाज को सशक्त और आत्मनिर्भर बनाने में सदैव प्रेरणास्रोत रहेगा।

दाना-पानी की स्वदेशी परंपरा

भारत का **'स्व'** यहाँ के लोगों के आचरण में दिखता है। जीवन का प्रत्येक व्यवहार, व्यापार नहीं हैं। इसीलिये भूखे को भोजन और प्यासे को पानी पिलाना हमारे आचरण में स्वधर्म है। आज भी भारत के कई गाँवों और कस्बों में गर्मी के दिनों में प्याऊ बैठाने की परंपरा वर्षों से चली आ रही है। गाँव के रास्ते पर दिनभर में चाहे पाँच-दस यात्री ही निकलते हो, परंतु सुबह से शाम तक ठंडे पानी का मटका रखे प्रतीक्षा रहती है कि कोई प्यासा आवेगा और पानी पीकर जावेगा। बॉटल में पानी बेचने का व्यापार हमारा नहीं है।

देश के हजारों गाँवों में आज भी पक्षियों के लिये अनाज डालने की परंपरा चल रही है। गाँव में किसी देवालय के पास ऊँचे-बड़े चबूतरे पर अनाज डालने का अवसर प्रत्येक परिवार को आता है। वर्षभर प्रतिदिन एक-एक परिवार द्वारा पक्षियों के लिये अनाज डालने का आचरण भारत में ही है।

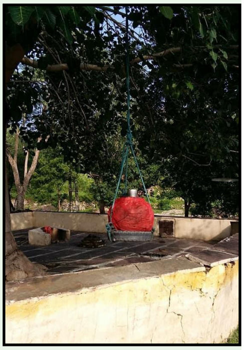

पूर्वजो ने जो सिखाया उस ओर हमे लौटना ही चाहिए।

अमित राव पवार, देवास

प्रकृति ने मनुष्य के लिए हर एक वस्तु का निर्माण स्वस्थ रहने के लिए ही किया था, पर मनुष्य ही है जो समय-समय पर प्रकति का दोहन कर खुद विनाश के ओर बढ़ रहा है। जबकि पूर्व में हमारे पूर्वजों की ओर हम देखगें तो उन्होंने भोजन बनाने से लेकर पानी पीने के अनेकानेक धातुओं के बर्तनों तक का ठीक से उपयोग किया करते थे। जिससे कि अस्वस्थता (बीमारियों) का खतरा कम होता था। ओर हमारे पूर्वज सदैव निरोगी जीवन व्यतीत करते थे। तांबा, पीपल, कासे, लोहे, मिट्टी के बर्तन आदि का उपयोग कर भोजन बनाने से लेकर उसे ग्रहण करने तक ओर पीने योग्य पदार्थो को के लिए इनका उपयोग किया जाता था। समय परिवर्तित हुआ। स्टील, जर्मन, में भोजन बन रहा और प्लास्टिक की बिसलेरी का पानी पीना अब शान बन गया है। जिससे कि पूर्व की अपेक्षा वर्तमान में हम देखते हैं तो मनुष्य अनेक बीमारियों से घिरा नजर आ रहा है। जिसका कारण संभवतः हमारा खान-पीन भी हो सकता है। पूर्व में जब हम पानी पीते थे तब हमारे पात्रों का भी एक अलग महत्व होता था। जैसे तांबे का पात्र,पीतल का पात्र, कासे पात्र, मिट्टी का पात्र।

हमारे पूर्वजों ने जो प्राचीन समय मे जो भी निर्मित अथवा अपनाया वह हमारे शरीर से लेकर हमारी प्रकृति तक के लिए लाभदायक रहा। बड़े-बड़े महारथी योद्धाओं ने इन धातुओं के बर्तन का ही अपने राजमहलों में उपयोग कर शारिरिक बल को बढ़ाया ओर समय आने पर अपनी मातृभूमि के लिए तैयार रहे। आज भी अस्वस्थ होने पर चिकित्सक हमे शुद्ध भोजन और पानी की सलाह देते है। तांबे के बर्तन का पानी पीने से अनेकों प्रकार की बीमारियां अपने आप ही खत्म हो जाती है। उसी प्रकार पीतल के बर्तन में भोजन करने से,ओर लोहे के बर्तन में भोजन बनाने से अनेक बीमारियों का नाश होता है। पर हम अब अपनी शान ओर समाज को दिखाने की होड़ में प्लास्टिक की बॉटल और डिस्पोजल की थाली में भोजन करना बडी बात समझ रहे है। वही वह प्लास्टिक हमारे शरीर के अंदर जाकर अनेकों तरह की बीमारियों को जन्म दे रहा है।

ज्ञात होता है कि जब बाजार में दूध लेने जाते थे तब घर से बर्तन ओर साथ मे एक कपड़े की थैली ले जाया करते, पर अब सब आधुनिकता के दौर में दूध की थैली भी ओर उसमे रखकर लाने वाला दूध भी प्लास्टिक की थैली में आ रहा है। इन सब का मनुष्य के शरीर में उपयोग करने से धीरे-धीरे स्वास्थ पर असर हो रहा है। ये सब ओर अधिक घातक साबित इससे पहले हमें हमारे पूर्वजों ने जो सिखाया या बतलाया है उस ओर हमे लौटना ही चाहिए।

आज मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु तक प्लास्टिक का उपयोग किसी न रूप में कर रहा है जो की उसके शारीरिक मानसिक स्वास्थ्य के लिए घातक है। अनेक घरों में खाद्य पदार्थ आता है वैसे ही सब्जियों के छिलके प्लास्टिक की थैलियां में डालकर बाहर डाल दिए जाते जिससे गाय एवं आदि अन्य जानवर खाकर प्रति वर्ष हजारों मौत होती है। स्वयं के द्वारा किए गए कार्यों से अगर वह नष्ट होती है तो इसका हमें स्वयं ही विचार करना चाहिए हम कहां हैं और

क्या कर रहे हैं।

सरकार द्वारा व्यवस्था की गई गीला-सूखा कचरा अलग से डाला जाए लेकिन कई बार देखा जाता है कि पढ़े-लिखे समाज के लोग भी इस बात का ध्यान नहीं रखते हैं और गीले कचरे में प्लास्टिक आदि डाल देते हैं। जिससे कि वह जमीन में जाकर जमीन को अनुउपयोगी भी बना देता है। अतः भूमि बंजर होने के कगार पर आ जाती है। ऐसे कार्य से व्यक्ति स्वयं व प्रकृति तथा जीवों को को भारी नुकसान पहुंचाता है। मनुष्य एक ओर तो अंतरिक्ष में खोज कर रहा है और दूसरी ओर वह पृथ्वी पर कुछ ऐसे कार्य कर रहा है कि जिससे आने वाले समय में जीव एवं मनुष्य का रहना मुश्किल हो जाएगा। प्रत्येक व्यक्ति अगर प्रतिज्ञा कर ले कि वह स्वयं के साथ प्रकृति का संरक्षण करेगा तो ही आने वाले भविष्य की सुनहरी कल्पना की जा सकती है।

मालवा निमाड़ की पारम्परिक भवन निर्माण विधि

डॉ. उत्तम मोहन सिंह मीणा

सबसे पहले हमें यह विचार करना होगा कि **स्व** का अर्थ क्या है? स्व अर्थात हमारा, जो हमसे निर्मित हुआ हो, हमने निर्माण किया हो वह होता है **स्व** । इसके बाद बात होगी कि **स्वदेशी** क्या होता है? अर्थात जो भी तत्व, सामग्री, वस्तु का निर्माण हमारे अपने देश में हमारे पुरखों ने किया हो वह होता है **स्वदेशी**। संभव है यह अजीब लगे कि इस लेख में **स्व** और **स्वदेशी** की चर्चा क्यों हो रही है? इसके अंतर्गत हमें यह समझना होगा कि हमारे पुरखों ने, बड़ों ने अपने ज्ञान, कौशल और तकनीकों से क्या कुछ किया और जो किया वह कितना प्रगतिशील, आकर्षक और वैज्ञानिक था? वास्तव में हमारे पूर्वजों ने कितनी प्रखरता से अपने क्षेत्र में जन्मी, निर्मित या कल्पित वस्तुओं, नीतियों, विचारों से कितने बड़े वैज्ञानिक निर्माण कार्य किए हैं।

इन्हीं सभी कार्यों में भारत के हृदय प्रदेश में स्थित मालवा और निमाड़ की भवन निर्माण परंपरा का कोई उत्तर नहीं है। हमारे पूर्वजों ने हमें वैश्विक स्तर के भवन निर्मित करके दिए और उन्हें बनाने की तकनीक को पीढ़ी दर पीढ़ी हमें सिखाया और उसे बेहतर बनाने का तरीका भी देते गए। हमारे यहाँ दो प्रकार के भवन निर्मित किए जाते रहे हैं, एक तो स्थायी भवन जिनका निर्माण पत्थर, सीमेंट आदि की सहायता से किया जाता रहा था। दूसरे वह जो पूरी तरह प्राकृतिक सामग्री से निर्मित होते थे, मतलब किसी भी पर्यावरणीय या भौतिक समस्या के समय भी उनमें रहने वालो को कोई समस्या नहीं होती थी। इसका मतलब है कि एक ओर तो भवन के निर्माण में पूरी तरह से वैज्ञानिक की तरह तकनीक का ध्यान रखा जाता था और साथ ही इनके निर्माण में पूरी तरह से प्रकृति को नुकसान न पहुंचने वाली सामग्री को ही उपयोग में लिया जाता था। आज भी हमें इन क्षेत्रों में ऐसे प्राचीन भवन दिखाई पड़ते हैं तो साथ ही वर्तमान समय में उस पुरखों की परंपरा से निर्मित भवन निर्माण की तकनीक का भी आभास होता है। इसीलिए इस भवन निर्माण की तकनीक को **स्वराज की आत्मा** भी कहा जाता है।

स्मृति शेष : श्री बालाराम भैया पाटीदार

महू में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का कार्य 1937 के आसपास प्रारंभ हुआ कोदरिया, गवली पलासिया और महू नगर में सबसे पहले राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखाएँ लगना प्रारंभ हुई थी।

गवली पलासिया निवासी श्री बलराम भैया पाटीदार संघ कार्य में बचपन से ही जुड़ गये तथा अपने 99 वर्ष की आयु निरंतर संघ कार्य में सक्रिय रहे है। अपने जीवन में सैकड़ों कार्यकताओं को उन्होंने संघ से जोड़ा। कई कार्यकर्ताओं को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रशिक्षण वर्गों में भेज कर उन्हें प्रशिक्षित करवाया और इस कारण पूरे इंदौर जिले में संघ कार्य को फैलाने में श्री बलराम भैया पाटीदार का योगदान महत्वपूर्ण है।

संघ कार्य के अतिरिक्त उनकी पशु उपचार एवं प्राकृतिक चिकित्सा के माध्यम से मनुष्य के उपचार में बड़ी रूचि थी तथा वह इसमें पारंगत भी थे। पूरे जिले में पशुओं के उपचार एवं प्राकृतिक चिकित्सा के माध्यम से मनुष्यों का उपचार बिना किसी शुल्क के आप करते थे। वह कृषि कार्य करने में भी बहुत रूचि लेते थे तथा अच्छी कृषि करना तथा उसके गुर लोगों को भी सीखना उनके स्वभाव में था। पिछले एक वर्ष को छोड़ दिया जाए तो वह अपने पूरे जीवन स्वयं मोटरसाइकिल चलाकर पूरे जिले में प्रवास किया करते थे तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्य में तथा जीवन उपयोगी सेवा कार्य में लगे रहते थे। एक समर्पित एवं सेवाभावी व्यक्तित्व के धनी बलराम भैया को शत शत नमन। **-शेरख बुंदेला**

धर्म, परंपरा और आधुनिकीकरण: अहिल्याबाई होलकर का दृष्टिकोण

विधि गिरगिश

अहिल्याबाई होलकर, मराठा साम्राज्य की एक महान शासिका, जिनकी दूरदर्शिता, धार्मिक सहिष्णुता और समाज कल्याण के कार्यों के कारण उन्हें इतिहास में एक आदर्श नेता के रूप में याद किया जाता है। उन्होंने न केवल मालवा क्षेत्र में सुशासन स्थापित किया, बल्कि धर्म, परंपरा और आधुनिकीकरण को संतुलित करते हुए समाज में उल्लेखनीय सुधार भी किए। उनके दृष्टिकोण को समझना आज के समय में भी प्रासंगिक और प्रेरणादायक है। अहिल्याबाई होलकर गहरी धार्मिक प्रवृत्ति की थीं, लेकिन उन्होंने धर्म को कभी भी अपने राज्य के प्रशासन पर हावी नहीं होने दिया। उनकी धार्मिक सहिष्णुता का उदाहरण उनके द्वारा किए गए कार्यों में दिखता है। उन्होंने काशी, गया, सोमनाथ, द्वारका और रामेश्वरम जैसे धार्मिक स्थलों का पुनर्निर्माण कराया, जिनसे विभिन्न धर्मों और संस्कृतियों के लोग जुड़े हुए थे। उनके लिए धर्म का अर्थ केवल पूजा-अर्चना नहीं, बल्कि जनसेवा था। उन्होंने समाज में हर वर्ग के लोगों का ध्यान रखा, चाहे वह किसी भी धर्म का हो, और इस प्रकार एक धर्मनिरपेक्ष शासन की स्थापना की। परंपराओं का सम्मान करना अहिल्याबाई के व्यक्तित्व का एक महत्वपूर्ण पहलू था, लेकिन वे अंधविश्वास के विरुद्ध भी थीं। उन्होंने समाज के उत्थान के लिए परंपराओं को सकारात्मक दृष्टिकोण से अपनाया, लेकिन किसी भी तरह के रूढ़िवादी या अंधविश्वासी आचरण का समर्थन नहीं किया। उनका मानना था कि परंपराओं का उद्देश्य समाज को एकजुट करना और नैतिकता का पालन करना होना चाहिए, न कि लोगों को मानसिक और सामाजिक रूप से पीछे धकेलना। अहिल्याबाई ने अपने शासनकाल में समाज में व्याप्त कई बुराइयों को दूर करने का प्रयास किया और आधुनिक दृष्टिकोण अपनाया। उन्होंने महिलाओं के लिए शिक्षा का प्रबंध किया और उन्हें आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनने के अवसर दिए। उनके शासनकाल में व्यापार और कृषि का विस्तार हुआ, जिससे समाज में आर्थिक प्रगति और सामाजिक बदलाव संभव हुआ। वे मानती थीं कि समाज को आगे बढ़ने के लिए बदलाव जरूरी हैं, और इसी कारण उन्होंने परंपराओं को आधुनिक सोच के साथ जोड़ा। अहिल्याबाई होलकर ने जाति और वर्ग के भेदभाव को कम करने के लिए कई कदम उठाए। वे सभी धर्मों और जातियों के लोगों को न्याय दिलाने में विश्वास रखती थीं। उनके न्यायालय में सभी को समान अवसर और न्याय मिलता था। वे मानती थीं कि शासन का उद्देश्य केवल ताकत या शक्ति प्रदर्शन नहीं, बल्कि लोगों के प्रति न्याय और सम्मान का भाव होना चाहिए। अहिल्याबाई होलकर का शासन इस बात का उदाहरण है कि किस प्रकार धर्म, परंपरा और आधुनिकता में संतुलन बनाकर एक प्रगतिशील समाज का निर्माण किया जा सकता है। उन्होंने धर्म का पालन किया, परंपराओं का सम्मान किया, और साथ ही आधुनिक सोच को भी अपनाया। उनके विचार आज के समाज में भी प्रासंगिक हैं, जहाँ धर्म और परंपरा के नाम पर कई तरह के अंधविश्वास और कट्टरता पनप रहे हैं।

अहिल्याबाई होलकर ने अपने शासन में धर्म, परंपरा और आधुनिकीकरण का अद्भुत संतुलन प्रस्तुत किया। उनकी यह सोच और उनका दृष्टिकोण आज के समय में भी प्रेरणादायक है। उनके आदर्श और मूल्य हमें यह सिखाते हैं कि किस प्रकार हम अपने धर्म और परंपराओं का सम्मान करते हुए आधुनिकता के साथ कदम मिला सकते हैं। उनकी शासन शैली और दृष्टिकोण से हम सीख सकते हैं कि कैसे समाज में समानता, न्याय और प्रगति को कायम रखा जा सकता है।

स्वभूषा का नैसर्गिक सौन्दर्य

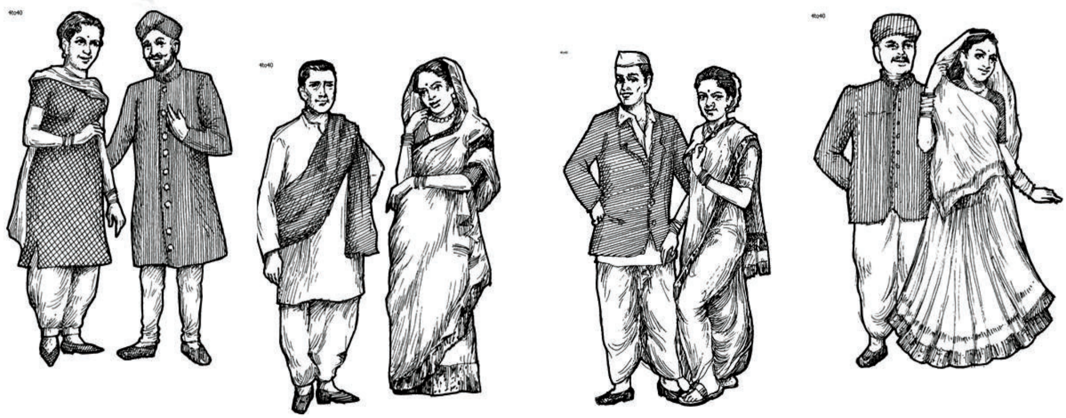

पीयूष शर्मा

बहुत नहीं, आज से पंद्रह-सत्रह वर्ष पूर्व हमारे आस-पास धोती और कमीज पहने वृद्ध लोग अक्सर दिखाई दे जाते थे। शहरों की अपेक्षा गावों में तो ऐसे व्यक्तित्व आम हुआ करते थे। उससे भी पंद्रह वर्ष पूर्व चले जाएं तो सिर पर काली टोपी पहनना प्रतिष्ठा का परिचायक था। हममें से कई लोग होंगे जिन्हें इस विवरण के साथ ही अपने दादा या नाना की याद आ गई होगी। सामान्यतः इस वेशभूषा के साथ वे अपने कंधे पर एक अंगोछा भी रखा करते थे, जो बहु-उपयोगी हुआ करता था। कभी उससे पसीना पौंछ लिया जाता था तो कभी वह पोटली बन फल रखने के काम आ जाता था। ऐसे ही दादी की लंबी सी साड़ी का पल्लू हमारे बचपन के आँसू पौंछने के काम आता था।

लगता है ये भूषा अब स्मृति में ही शेष रह जाएंगी। आज धोती और कमीज में छाता लिए हुए कोई व्यक्ति दिखाई पड़ जाए तो **एलियन** सा लगेगा। कोट, पैंट, टाई, जींस और टी-शर्ट की माया में हम अपने भारतीय परिधानों को इतना पीछे छोड़ आए हैं कि चाहकर भी संकोच के मारे अपना नहीं पाते।

किसी भी क्षेत्र में परिधानों का विकास वहाँ की भौगोलिक परिस्थितियों, सामाजिक व्यवस्था और नैतिक मूल्यों के आधार पर होता है। यूरोप के ठंडे प्रदेशों में ठंड से सुरक्षा के लिए कोट और टाई का विकास हुआ तो वहाँ के नैतिक मानदंडों के आधार पर महिलाओं ने अल्प वस्त्रों से भी गुरेज नहीं किया। किन्तु भारत में परिस्थिति बिल्कुल उलट थी। गर्म प्रदेश होने के कारण यहाँ धोती और कमीज जैसे खुले परिधान विकसित हुए जिनमें हवा का प्रवाह बना रहता है, तो वहीं यहाँ के उच्च नैतिक मूल्यों के चलते स्त्रियों के लिए साड़ी जैसे परिधान विकसित हुए।

किन्तु आज आधुनिकता की दौड़ में भागते हुए हम अपनी स्वभूषा ही भुला चुके हैं। जींस और टी-शर्ट के कसे हुए ताने-बाने में क्षेत्रीय सामाजिक आवश्यकता और हमारे मूल्यों का दम घुटने लगा है। ऐसे में मन में प्रश्न आता है कि इस बदले हुए परिवेश में हम पुनः स्वभूषा की डगर पर लौट भी भला कैसे सकते हैं ? किन्तु सच तो यह है कि इसका समाधान भी हमारे अपने ही संकल्पों में छुपा है।

हम निश्चय करें कि हमारे पास कुछ परिधान विशुद्ध भारतीय अर्थात् कुर्ता-पायजामा, साड़ी इत्यादि होंगे। सप्ताह में एक बार या महीने में दो-तीन बार हम भारतीय परिधान ही पहनेंगे। घर के मांगलिक अवसरों पर, त्यौहारों में या अन्य विशेष अवसरों पर धोती भी पहनी जा सकती है। इसी प्रकार स्वभूषा के लिए यदि हम निश्चय कर लें, तो यह छोटा सा संकल्प एक बड़ा परिवर्तन ला सकेगा।

जैसा खायें अन्न वैसा बने मन

डॉ. शिवनन्दन वर्मा, देवास

महाभारत का प्रसंग है... भीष्मपितामह शरशैय्या पर लेटे युद्धिष्ठिर को धर्मोपदेश दे रहे थे तभी द्रोपदी ने पितामह से पूछा कि जब कौरवों की सभा में मेरे वस्त्र उतारे जा रहे थे तब आप वहाँ मौजूद थे उस वक्त आपका समूचा धर्मज्ञान कहाँ चला गया था और आप मौन क्यों बने रहे? पितामह ने उत्तर दिया कि तब मैं दुर्योधन का अन्याय पूर्वक अर्जित अन्न जल ग्रहण कर रहा था। अतः मेरी बुद्धि भी उसी से प्रभावित थी। इसलिये मैं अन्याय के विरुद्ध आवाज नहीं उठा सका।

यह प्रसंग इसी कहावत को चरितार्थ करता है कि जैसा खाओं अन्न, वैसा होगा मन। वास्तव में हमारा चरित्र ही नहीं बल्कि बुद्धि की भावनाऐं भी उस भोजन से प्रभावित होती है। जो हम ग्रहण करते है।

जीवन भगवान की सर्वोत्तम भेंट हैं और निरोग रहना सबसे बड़ा वरदान । निरोग रहने के लिये आवश्यक है पोषक भोजन। हम स्वस्थ रहने के लिये कब क्या खाएं ताकि भोजन से न केवल उदर पूर्ति हो, बल्कि दवा की तरह प्रभाव डालता हुआ वह हमें स्वस्थ भी रखे।

भोजन स्वस्थ जीवन व्यतीत करने का आधार है। खाये जाने वाला भोजन यदि रूचिकर हो एवं पच जाए तो हम स्वस्थ रहेंगे। स्वास्थ्य वर्धक आदर्श भोजन के लिये आधुनिक विज्ञान में अनेक चार्ट मिलते हैं जिनमें कैलोरिज के हिसाब से नित्य कितनी मात्रा में कार्बोज, प्रोटिन विटामिन आदि खाद्य पदार्थों की मात्रा दी हुई होती है, परन्तु पाचन ठीक न होने से इतनी कैलोरिज हमें तत्व रूप में नहीं मिलती जितनी हम खाते हैं । परिणाम यह होता है कि हम बीमार पड़ जाते हैं। अतः भोजन पर विशेष ध्यान देकर यह खाद्य सही ढंग से खाना चाहिए जो शरीर का पोषण करते हुए रोग मुक्त करने में औषधी की तरह काम करें ।

हमारे दैनिक जीवन में हम मृतप्रायः भोजन लेते हैं। यदि भोजन में सुधार और संयम पूर्वक जीवन व्यतीत करते रहें तो शतायु होने से हमें कोई नहीं रोक सकता । गीता में कहा भी है कि सात्विक आहार आवश्यकता से कम खाने से आयु बढ़ती है। पेट को अन्न से थोा खाली रखो ताकि उसमें भगवान का दर्शन कर सकें। खान पान चाहे कितना भी स्वादिष्ट हो तो भी कम खाए। भली प्रकार चबा-चबा कर खाएं। आदमी अधिक खाकर जल्दी मरता है कम खाकर नहीं। खाईए कम पचाईये ज्यादा। सदा हंसमुख रहिये।

स्वास्थ्य एवं सौंदर्य आवश्यकतानुसार भोजन से अच्छा रहता है। आपकी दिनचर्या जितनी प्रकृति से निकट होगी आप उतने ही स्वस्थ एवं चिरायु होंगे । यदि भोजन शुद्ध है तो सात्विकता आती है। सात्विकता से अटल स्मरण शक्ति बढ़ती है और स्मरण शक्ति से ज्ञान की प्राप्ति होती है। ज्ञान से हृदय की गांठ खुल जाती है अर्थात अज्ञान नष्ट होकर सभी शंकाओं का समाधान होता है, इस प्रकार सात्विक भोजन से सब प्रकार का कल्याण होता है । मनुष्य के लिये सबसे उपयोगी भोजन वह है जो या तो अपनी प्राकृतिक अवस्था और स्वरूप में हो या उसकी अवस्था और स्वरूप में कम से कम परिवर्तन हुआ हो। प्राकृतिक चिकित्सा में सात्विक पदार्थों का सेवन किया जाता है। प्राकृतिक चिकित्सकों के दृष्टिकोण से भोजन ही औषधी और औषधी ही भोजन है ।

प्राकृतिक भोजन शरीर की आंतरिक प्रतिरोधक क्षमता को इतना अधिक गतिशील बना देता है कि वह सभी प्रकार के संक्रामक रोगों का प्रतिरोध करने में सक्षम होता है । इसलिये भोजन के द्वारा चिकित्सा (प्राकृतिक चिकित्सा) आयुर्वेद चिकित्सा का एक अंग है ।

जीवन की खुशहाली

प्रेम मंगल

जीवन की इस हरियाली में,
रमके देखो, मौज-मस्ती में,
जरा तुम जी कर तो देखों।

समन्दर की लहरों को देखों,
हिलोरे और मस्ती उन लहरों की देखो।
पतझड़ में भी वृक्ष जड़ों की,
मजबूती को पास जाकर तो देखो।

उन सहमे हुए रजनी के आँचल,
में सोते हुए, मासूम बच्चों को देखो।
किनारे से पहले डूबती नैया को देखो,
संबल न देने वाले क्रूर कूलो को देखो।

भावों की तड़प छोड़ संगीतमय धुन देखो,
बहारों के मौसम में सावन को तुम देखो।
सजी-धजी ललनाओं के झूलों को देखो,
अवसादों की बस्ती से तुम बाहर निकलो।

पहुनाई सूनेपन की दिल से दूर हटा दो,
विपदा आती-जाती हैं, उनसे मत घबराओं।
आशा-निराशा के झौंको में भी आनंद लो।
गीत मधुर और सारगर्भित तुम ऐसे गाओं,

अन्तर्मन के सारे गम और दुखड़े हटा दो।
जीवन दुखड़े का दुर्लभ स्थल मत समझो,
इसे हँस-हँस कर जीयों, हँसाकर जीयो।

संस्कार वर्ग पहेली...!

बांये से दाये

1. जहां बारात ठहराई जाए **4.** रावण के ससुर **8.** नमस्कार, झुकना **10.** जंगल **11.** ज्वलंत, उज्जवल **14.** स्थान, जगह **15.** एक फल, सामान्य **16.** 'मां पार्वती' का एक नाम **17.** अयोध्या की पवित्र नदी **19.** धूल **20.** भगम, बैल होमने की रस्सी **21.** स्त्री, प्रिया **22.** एक हिन्दू महीना **23.** अतःकरण **24.** दैत्यों की माता **25.** आशीर्वाद, पती **26.** अस्थिर, गतिमान **27.** श्रंखला **28.** भगवान कृष्ण की पटरानी **29.** बनाना

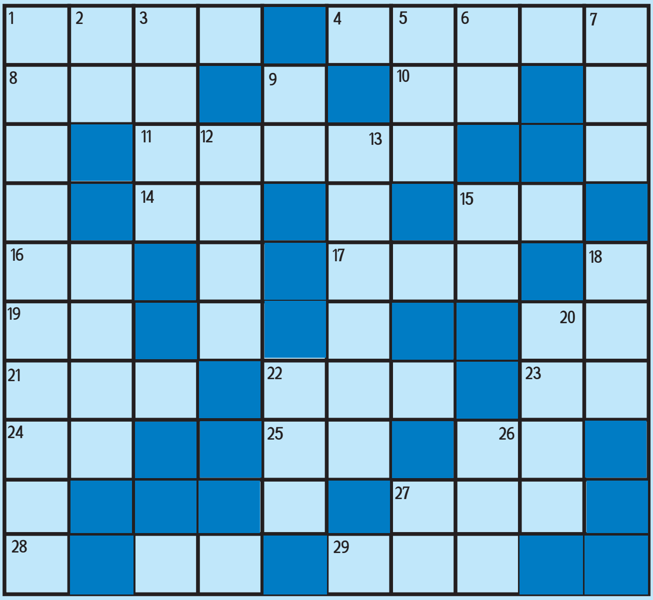

उपर से नीचे

1. भगवान बिरसा मुंडा जंयती **2.** गीला, आर्द्र **3.** तीसरा आश्रम **5.** विदेशी, मुस्लिम या इसाई **6.** दिया हुआ **7.** भगवान विष्णु का एक अवतार **9.** प्रसिद्धी **12.** एक राक्षस जिस मां दुर्गा ने मारा था **13.** तिब्बत में स्थित पवित्र हिंदू स्थान **15.** अवस्था, उम्र **16.** शासन की विद्या **18.** कपड़े, वस्त्र **20.** भगवान श्रीराम का बाल स्वरूप **22.** प्राचीन उत्तर भारत का एक प्रमुख स्थान, कौशल राज्य की राजधानी **26.** स्वाद लेना **27.** खेत की सीमा

(उत्तर अगले अंक में)

पिछले माह के उत्तर - बांए से दांए - 1. हलाहल 3. मनोमय 6. लव जिहाद 7. नाग लोक 9. पुर 10. खाले 12. रजस 14. श्वसुर 15. तुणीर 16. साम 18. कमल 20. वर्धमान 21. रावी 23. राणा बख्तावर सिंह
ऊपर से नीचे - 1. हस्तिनापुर 2. ललक 3. महाकालेश्वर 4. नोदन 5. यमुना 8. गरजना 11. सुरसा 13. मातुल 17. खांडेराव 19 नेमावर 22. मास

म्हारी भाषा-म्हारी बोली

योगेश भोपे

भाषा व बोली का विषय आते ही हमें हमारी गौरवशाली संस्कृति का आभास होने लगता है। हो भी क्यों ना! भाषा का सीधा संबंध किसी भी देश या स्थान की संस्कृति से ही होता है। हमारे भावों की अभिव्यक्ति के सभी साधनों को सामान्य रूप से भाषा का दिया जाता है किंतु भाषा विज्ञान में जिस भाषा को ग्रहण किया जाता है वह सांकेतिक आदि से भिन्न मानवीय व्यक्त वाणी है। भाषा संस्कृत की भाष् धातु से बनी है जिसका अर्थ है- **भाष् व्यक्तानां वाची।** भाषा ईश्वर द्वारा मानव को दिया गया सबसे बड़ा वरदान है। भाषा की उत्पत्ति भारत में हुई। भारत में भाषा का स्तर अत्यंत समृद्ध था तब विश्व के अन्य स्थानों के लोग बोल भी नहीं पाते थे। हमारी सामान्य बोलचाल की भाषा संस्कृत थी इसलिए हमारे वेद, पुराण आदि ग्रंथ संस्कृत में ही प्राप्त होते हैं।

भाषा का एक ओर आंतरिक रुप है बोली। शरीर भाषा है तो बोली अंग है। भारत की भाषा की समृद्धता और विविधता का आधार है बोली की अधिकता...और इसका प्रमाण है यह लोकोक्ति- चार कोस में बदले पानी आठ कोस में बानी। इस बानी में भारतीय संस्कृति का सौधापन है और सौंधापन गांव की उसमें मिट्टी से आया है जहां असली भारत तो निश्चित ही भारत में बोली का अपना अनूठा स्थान है। हमारा मालवा प्रान्त दो मीठी बोलियों से सुसज्जित है। एक ओर जहाँ निमाड़ में निमाड़ी तो मालवा में मालवी बोली प्रसिद्ध है। निमाड़ी व मालवी बोली का अपना एक विस्तृत क्षेत्र है। खंडवा, खरगोन, बड़वानी,आलिराजपुर, झाबुआ, के साथ धार के कुछ क्षेत्रों निमाड़ी व सहयोगी बोली भिली का व्यापक प्रसार है वही दूसरी और धार, इन्दौर, उज्जैन, रतलाम, मंदसौर, नीमच, शाजापुर, देवास में मालवी बोली के साथ मारवाड़ी बोली का भी पुट स्पर्श होता है। मालवी व निमाड़ी बोली का अपना सु समृद्ध साहित्य है। मालवी बोली को विश्व पटल पर पहचान दिलाने में बालकवि बैरागी का महत्वपूर्ण योगदान है-

अम्बा लगईग्यो ने हँाठा उगईग्यो।
काँटा का नखल्या तोड़ीग्यो भूखा ने धाणी गूँगा ने वाणी देह ने हठीलो पोढ़ी ग्यो।

वही निमाड़ी बोली को संत सिगंजी ने अपनी अमृतवाणी से इसे जन-जन तक पहुचाने का कार्य किया।

निर्गुण ब्रह्म है न्यारा,कोइ समझो समझण हारा।
खोजत ब्रह्मा जनम सिराना मुनिजन पार न पाया।

वर्तमान में बोली का यह संसार लोकगीतों के माध्यम से युवाओं को अपने ओर आकर्षित कर रहा है कई युवा प्रतिभा इन गीतों के माध्यम से बोली को विश्व प्रसिद्ध बनने में अपना योगदान दे रही है। जिससे यह विश्वास बना है आने वाली पीढ़ी बोली की मिठास की ओर से परिचित हो सकेगी।

हमारी बातचीत

प्रिय पाठकों ,

अगले माह से आपकी अपनी पत्रिका जागृत मालवा में एक नया स्तम्भ हमारी बातचीत प्रकाशित होगा। इस स्तम्भ में आपके सुझाव और मन की बात प्रकाशित करेंगे। आप अपने सुझाव, मालवा-निमाड़ से जुड़ी बातें और समसामयिक विषयों पर अपनी बात व्हाट्सएप, ई-मेल या पत्र के माध्यम से भेज सकते है। आप पत्रिका के लिए सुझाव और अपने मौलिक विचार भी लिख कर भेज सकते हैं, जिनकी सहायता से हम जागृत मालवा को और अधिक अपनी बना सकेंगे।

आपके चयनित पत्रों को हम इस स्तम्भ में प्रकाशित भी करेंगे।

व्हाट्सएप - 9977712561
ईमेल - jagrutmalwa@gmail.com
पता -विश्व संवाद केन्द्र, अर्चना, 76 रामबाग, इन्दौर

हमारे भी पास सात दिन ही हैं!

एक बार की बात है संत तुकाराम अपने आश्रम में बैठे हुए थे। तभी उनका एक शिष्य, जो स्वभाव से थोड़ा क्रोधी था उनके समक्ष आया और बोला- गुरूजी, आप कैसे अपना व्यवहार इतना मधुर बनाये रहते हैं, ना आप किसी पे क्रोध करते हैं और ना ही किसी को कुछ भला-बुरा कहते हैं? कृपया अपने इस अच्छे व्यवहार का रहस्य बताइए?

संत बोले - मुझे अपने रहस्य के बारे में तो नहीं पता, पर मैं तुम्हारा रहस्य जानता हूँ!

मेरा रहस्य! वह क्या है गुरु जी? शिष्य ने आश्चर्य से पूछा।

तुम अगले एक हफ्ते में मरने वाले हो! संत तुकाराम दुखी होते हुए बोले। कोई और कहता तो शिष्य ये बात मजाक में टाल सकता था, पर स्वयं संत तुकाराम के मुख से निकली बात को कोई कैसे काट सकता था? शिष्य उदास हो गया और गुरु का आशीर्वाद ले वहां से चला गया। उस समय से शिष्य का स्वभाव बिलकुल बदल सा गया। वह हर किसी से प्रेम से मिलता और कभी किसी पे क्रोध न करता, अपना ज्यादातर समय ध्यान और पूजा में लगाता। वह उनके पास भी जाता जिससे उसने कभी गलत व्यवहार किया था और उनसे माफी मांगता। देखते-देखते संत की भविष्यवाणी को एक हफ्ते पूरे होने को आये।

शिष्य ने सोचा चलो एक आखिरी बार गुरु के दर्शन कर आशीर्वाद ले लेते हैं। वह उनके समक्ष पहुंचा और बोला- गुरुजी, मेरा समय पूरा होने वाला है, कृपया मुझे आशीर्वाद दीजिये!

मेरा आशीर्वाद हमेशा तुम्हारे साथ है पुत्र। अच्छा, ये बताओ कि पिछले सात दिन कैसे बीते? क्या तुम पहले की तरह ही लोगों से नाराज हुए, उन्हें अपशब्द कहे? संत तुकाराम ने प्रश्न किया।

नहीं-नहीं, बिलकुल नहीं। मेरे पास जीने के लिए सिर्फ सात दिन थे, मैं इसे बेकार की बातों में कैसे गँवा सकता था? मैं तो सबसे प्रेम से मिला, और जिन लोगों का कभी दिल दुखाया था उनसे क्षमा भी मांगी: शिष्य तत्परता से बोला। संत तुकाराम मुस्कुराए और बोले, बस यही तो मेरे अच्छे व्यवहार का रहस्य है। मैं जानता हूँ कि मैं कभी भी मर सकता हूँ, इसलिए मैं हर किसी से प्रेमपूर्ण व्यवहार करता हूँ, और यही मेरे अच्छे व्यवहार का रहस्य है। शिष्य समझ गया कि संत तुकाराम ने उसे जीवन का यह पाठ पढ़ाने के लिए ही मृत्यु का भय दिखाया था।

वास्तव में हमारे पास भी सात दिन ही बचें हैं: रवि, सोम, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि, आठवां दिन तो बना ही नहीं है। परिवर्तन आज से आरंभ करे।

देवी अहिल्याबाई होलकर: इंदौर की शान

आशिका वर्मा

देवी अहिल्याबाई होलकर का जन्म 31 मई 1725 को महाराष्ट्र के चौंडी नामक गाँव में हुआ था। उनके पिता मानकोजी शिंदे एक कृषक थे। अहिल्याबाई बचपन से ही धार्मिक और समाजसेवी भावना की थीं। अहिल्याबाई का विवाह 1733 में मालवा के प्रसिद्ध होलकर वंश के खंडेराव होलकर के साथ हुआ। विवाह के बाद वे इंदौर आईं, जहाँ उन्होंने एक आदर्श गृहिणी और राजसी महिला का जीवन जिया। 1754 में उनके पति खंडेराव की मृत्यु युद्ध में हो गई, जिसके बाद उन्हें इंदौर की जिम्मेदारी सँभालने के लिए दी गयी। मल्हारराव की मृत्यु के बाद, अहिल्याबाई का शासिका के रूप में योगदान दिखा। उन्होंने अपने शासनकाल में न्याय, धर्म और सांस्कृतिक विकास पर ध्यान दिया। वे एक कुशल प्रशासिका थीं जिन्होंने इंदौर को समृद्धि और विकास की ऊंचाइयों पर पहुँचाया। अहिल्याबाई होलकर ने भारतीय इतिहास में अपनी एक विशेष छाप छोड़ी। वे केवल एक शासिका ही नहीं, बल्कि महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्त्रोत भी थीं। उनकी महानता, निष्पक्षता और सेवाभावी स्वभाव के कारण उन्हें देवी का दर्जा दिया गया है, **देवी अहिल्याबाइ होलकर**।

अहिल्याबाई ने अपने शासन में कई मंदिरों, धर्मशालाओं और घाटों का निर्माण कराया। काशी के विश्वनाथ मंदिर, उज्जैन के महाकालेश्वर मंदिर, सोमनाथ मंदिर, द्वारका और अयोध्या के मंदिरों का जीर्णोद्धार भी उनके द्वारा किया गया था। उनके राज्य इंदौर में उनके नाम से विश्वविद्यालय, सब्जी मंडी, एयरपोर्ट और कई दर्शनीय स्थलों का निर्माण किया गया है। देवी अहिल्याबाई होलकर ने भारतीय इतिहास में प्रेरणादायी महिला की विशेष छाप छोड़ी है। उनकी न्यायप्रियता और योगदान के करण उन्हें प्रेम और आदर के साथ देवी की तरह याद किया जाता है।

रामलला के विराजमान होने के बाद मनाई गई पहली दीपावली

इस बार अयोध्या की दीपावली विशेष थी। 500 वर्षों बाद यह पहला अवसर था, जब दीपावली पर भगवान रामलला अपने गर्भगृह में विराजमान थे। इस वर्ष श्रीराम मंदिर में 30 व 31 अक्टूबर को दो दिनों तक विशेष उत्सव का माहौल रहा। रामलला को विशेष श्रृंगार कर आकर्षक पोशाक पहनाई गई, विविध भोग लगाए गए और विशेष आरती व पूजन के कार्यक्रम सम्पन्न हुए। इस हेतु पहले श्रीराम मंदिर परिसर को पूरी भव्यता के साथ सजाया गया था। साथ ही मंदिर भवन में विविध प्रकार के फूलों, प्रकाश व्यवस्था व रंगोली का मनमोहक दृश्य दिखाई दिया। मंदिर के गर्भगृह और आसपास, मंदिर ट्रस्ट की ओर से बनवाए गए 300 विशेष दीपक प्रज्वलित किए गए, जबकि 70 एकड़ मंदिर परिसर में सरसों के तेल के दीपक प्रज्वलित किए गए। मंदिर ट्रस्ट के द्वारा भव्य राम मंदिर में पहली दीपावली अद्भुत और अविस्मरणीय बनाने की पूरी तैयारी की गई थी।

उत्तर प्रदेश सरकार ने इस साल फिर एक नया विश्व रिकॉर्ड बनाया। सरयू के तट पर 28 लाख दीये जलाए गए। विशेष बात यह थी की इस बार इको फ्रेंडली दीयों से राम मंदिर को प्रकाशित किया गया। अयोध्या में जलाए गए दीपों को विशेष रूप से इस तरह तैयार किया गया था कि मंदिर प्रांगण में या मंदिर की दीवारों पर किसी भी

तरह का निशान नहीं पड़े और साथ ही ये दीप लंबे समय तक जलते रहें। सरयू नदी के 55 घाटों पर दीप जलाए गए, जिसके लिए 30,000 से ज्यादा स्वयंसेवी इस कार्य में लगे। 80,000 दीयों से स्वास्तिक का चिन्ह बनाया गया, जो दीपोत्सव के मुख्य आकर्षणों में से एक रहा।

मंदिर ट्रस्ट दिवाली पर अयोध्या को न केवल भक्ति का केंद्र बनाना चाहता है, बल्कि प्रयास है कि यह स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण के लिए भी एक अच्छा उदाहरण बने और समाज को सकारात्मक संदेश देता रहे।

विधर्मियों के निशाने पर हिंदू त्योहार

हिंदू त्योहार अक्सर ही विधर्मियों के निशाने पर रहते हैं। उपद्रवियों का सदैव यह प्रयास रहता है कि हिंदू अपने त्योहार ठीक से नहीं मना पाएं। दीपावली पर इंदौर में भी ऐसी ही एक घटना को अंजाम दिया गया। दीपावली के दूसरे दिन शुक्रवार को छत्रीबाग और रविदासपुरा में सांप्रदायिक विवाद हो गया। दरअसल यहां एक अनुसूचित जाति की बच्ची दीपावली के अवसर पर, पटाखे छोड़ रही थी। यह बात सामने रहने वाले मुस्लिम परिवार को पसंद नहीं आई और उसने जातिसूचक शब्दों का उपयोग करते हुए, बच्ची को पटाखे छोड़ने से रोका और नहीं रुकने पर उसे डराया और धमकाया। बच्ची के परिवारजनों द्वारा मामला संभालने का प्रयास करने पर आस-पास के मुसलमानों की भीड़ इकट्ठा हो गई। वे सारे इस पूरे परिवार को धमकाने लगे। भीड़ में उपस्थित सलमान नामक व्यक्ति ने तो हिंदू बच्चियों को लात और घूंसों से मारा और एक बच्ची को गोद में उठाते हुए कहा कि इसके साथ तो सामूहिक दुष्कर्म करेंगे। सूत्रों के अनुसार इनमें से कुछ लोग अपने साथ पिस्तौल लेकर भी आए थे। पीड़ित बच्ची की कनपटी पर पिस्टल अड़ा कर उसे गोली मारने की धमकी भी दी गई। पटाखे छोड़ने से प्रारंभ हुई इस घटना ने थोड़ी ही देर में बड़ा स्वरूप ले लिया और आस-पास रहने वाले मुस्लिम घरों से हिंदू परिवारों पर पथराव होने लगा। घटना की जानकारी मिलते ही आस-पास क्षेत्र के हिंदू लोग भी निकल आए और इस तरीके से दोनों पक्ष आमने-सामने हो गए। इस अफरा-तफरी और पत्थरबाजी में कई लोग घायल हुए और वाहनों को भी नुकसान पहुंचा।

दरअसल इस बस्ती में गिने-चुने हिंदू परिवार ही निवास करते हैं। हिंदू परिवारों का यह कहना है कि आस-पास रहने वाले मुसलमान उनकी जमीन पर कब्जा करके उन्हें वहां से भागना चाहते हैं। इसीलिए आए दिन वह उन्हें बिना किसी कारण के परेशान किया करते हैं। पुलिस ने प्रकरण बना 14 लोगों के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज कर ली है।

एक मौन तपस्वी का स्वर्गारोहण

पूर्व राज्यसभा सदस्य और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्रीयुत् श्रीगोपाल जी व्यास का नवंबर माह में लंबी बीमारी के बाद देहावसान हो गया। उन्होंने 93 वर्ष की आयु में अंतिम श्वास ली। उनका जन्म 15 फरवरी 1932 में रायपुर में हुआ था। उन्होंने जबलपुर से इंजीनियरिंग की डिग्री ली और भिलाई स्टील प्लांट में सीनियर इंजीनियर के रूप में सेवाएं दीं। वे बाल्य काल में ही संघ के स्वयंसेवक बने। ततपश्चात श्रीगोपाल जी ने प्रांत कार्यवाह, प्रांत प्रचारक, क्षेत्र प्रचारक आदि विभिन्न दायित्वों का निर्वहन किया। जब वे भिलाई स्टील प्लांट में कार्यरत थे, तब प्रान्त कार्यवाह रहे। फिर नौकरी से वीआरएस लेकर उन्होंने सम्पूर्ण जीवन संघ की सेवा में समर्पित कर दिया। वे महाकौशल प्रान्त के प्रांत प्रचारक रहे। विश्व हिन्दू परिषद के अखिल भारतीय सयुंक्त महामंत्री रहे। व्यास जी ने संघ कार्य विस्तार के लिए जबलपुर से रायपुर पैदल यात्रा भी की। संघ गांव-गांव, घर-घर पहुंचे, इसके लिए प्रयत्नशील रहे। वर्ष 1975 से 1977 तक आपातकाल में जेल में रहे। आपातकाल में जेल में रहते ही उन्होंने वकालत की पढ़ाई की। उनका पूरा जीवन त्यागमय था। वे अपने सिद्धांतों पर अडिग रहने वाले व्यक्ति थे। उन्होंने कभी परिस्थितियों के साथ समझौता नहीं किया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को अपने जीवन में सर्वोच्च माना।

उनके पास केवल दो ही कार्य थे, एक नौकरी और दूसरा संघ कार्य। उनके साथ कार्य कर चुके लोग उन्हें सन्त के रूप में याद करते हैं। वे मिलनसार थे। जिससे भी मिलते थे तो बड़े प्रेम से मिलते थे। लोगों को कभी ये नहीं लगता था कि वे पहली बार उनसे मिल रहे हैं। एक बार परम् पूज्य सर संघचालक जी का आगमन दुर्ग में होने वाला था। केवल दो दिन में पत्रक बांटने थे। उस समय दुर्ग बहुत बड़ा जिला हुआ करता था। कवर्धा, बेमेतरा, छुईखदान तक फैला हुआ था। तब वे एक अन्य स्वयंसेवक के साथ स्कूटर में निकले और धमधा, देवकर, बेमेतरा, छुईखदान, राजनांदगांव में पत्रक बांटते हुए दो दिन बाद दुर्ग पहुंचे। वे संघ के अथक सेवाधारी स्वयंसेवक थे।

वे वर्ष 2006 से 2012 तक छत्तीसगढ़ से राज्यसभा के सदस्य भी रहे। उन्हें दूसरा कार्यकाल देने की बात उठी, तो उन्होंने स्वयं यह कहकर मना कर दिया कि अन्य लोगों को अवसर मिलना चाहिए। उनके सादगीपूर्ण जीवन के अनेक उदाहरण मिल जाएंगे। एक बार राज्यसभा सांसद रहते हुए उन्हें भिलाई में संघ शिक्षा वर्ग में आमंत्रित किया गया। जब उन्हें बताया गया कि उन्हें लेने गाड़ी आ जायेगी तो उन्होंने स्पष्ट मना कर दिया। उन्होंने कहा कि वे स्वयं की व्यवस्था से आ जाएंगे। वे राज्य परिवहन की बस से भिलाई पहुंचे और वहाँ के स्वयंसेवकों को सूचना दी कि मुझे बस स्टैंड से ले लो। व्यवस्था में उपस्थित स्वयंसेवक उन्हें लेने पहुंचे तो उन्होंने कहा कि वे कार से नहीं जाएंगे। एक स्वयंसेवक जो कि दुपहिया वाहन से पहुंचे थे, उनकी गाड़ी में पीछे बैठकर वर्ग में पहुंचे। भिलाई के तो सैकड़ों परिवार उन्हें अपने घर का मुखिया मानते हैं।

संसार से विदा होते हुए भी उन्हें समाज की ही चिंता थी, यही कारण है कि उनकी इच्छा के अनुसार उनका देहदान किया जाएगा। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प.पू. सरसंघचालक श्री मोहन भागवत ने भी व्यास जी के निधन पर शोक व्यक्त करते हुए उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी है।

- टोपलाल वर्मा, प्रांत संघचालक, छत्तीसगढ़

जाग्रत मालवा अब सोशल मीडिया पर भी

जाग्रत मालवा से वेबसाइट फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम व यूट्यूब पर जुड़कर देशभर के विशेषकर मालवा के समाचार प्राप्त कर सकते हैं।

अभी फॉलो करें - किसी भी प्लेटफॉर्म पर जाकर जाग्रत मालवा सर्च करें

पुण्यश्लोक लोकमाता अहिल्याबाई होलकर जन्मदिवस त्रिशताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य पर अभाविप द्वारा आयोजित मानवंदन यात्रा का शुभारंभ।इस यात्रा का शुभारंभ लोकमाता अहिल्याबाई की जन्मभूमि चौंडी (महाराष्ट्र) से लाई गई पवित्र मिट्टी के कलश के पूजन से हुआ।यात्रा लगभग 1300 किमी की दूरी तय करते हुए 21 नवंबर को अभाविप के 70 वे राष्ट्रीय अधिवेशन स्थल पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी होलकर नगर, गोरखपुर में संपन्न हुई।

भारतीय पारंपरिक भोजन में शरीर को ठीक करने वाले रसायन, एंटिऑक्सिडेंट, फायबर और प्रो बायोटिक्स जैसे तत्व होते है।

जनवरी माह के मुख्य व्रत, त्यौहार एवं दिवस

ता. 06 गुरु गोविंद सिंह जयंती
ता. 12 स्वामी विवेकानंद जयंती, युवा दिवस
ता. 13 लोहड़ी
ता. 14 मकर संक्रांति
ता. 23 सुभाषचंद्र बोस जयंती
ता. 26 गणतंत्र दिवस

बुक-पोस्ट
जाग्रत मालवा

प्रति,

स्वामी- विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11डी, पोलोग्राउण्ड इन्दौर म.प्र. से मुद्रित एवं अर्चना भवन, 76 रामबाग, इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक अरूण सपकाले फोन नं. 0731-3551341